कत्थक नृत्य - प्रस्तुतीकरण क्रम

सारांश : भारत में अनेक शास्त्रीय नृत्य शैलियां प्रचलित हैं l कत्थक नृत्य उत्तर भारत की शास्त्रीय नृत्य शैली है जिसका संबंध उत्तर भारत में रहने वाले एक विशेष वर्ग से है जिन का कार्य किसी समय में मंदिरों , राज दरबारों आदि में कथा वाचन का रहा है l यह कथा वाचन धार्मिक पौराणिक ग्रंथों में से कथाएं लेकर भावपूर्ण अंदाज से किया जाता था l कथा वाचन करने वाले यह विशेष लोग कालांतर में कत्थक नृत्य के पूर्वज कहलाए l कथा वाचन की इस प्रथा से आगे चलकर जैसे ही यह नृत्य शास्त्र सम्मत हुआ इसमें नृत, नृत्य तथा नाट्य तीनों के गुण आए l कत्थक नृत्य के प्रथम भाग में ठाट, आमद, सलामी, तोड़े, टुकड़े, परन प्रस्तुत किए जाते हैं l यह कथक नृत्य का शुद्ध नृत भाग होता है l इस भाग में अंग- संचालन के द्वारा नृत्य की प्रस्तुति दी जाती है l कथक नृत्य के दूसरे भाग में नृत्य के अंश सम्मिलित होते हैं इसलिए कत्थक के इस भाग में नृत्य और अभिनय दोनों द्वारा प्रस्तुति की जाती है l कत्थक नृत्य का तीसरा भाग नाट्य का भाग होता है l कत्थक नृत्य के इस तीसरे चरण में नृत्य द्वारा भावों का अभिनय किया जाता है l

मुख्य शब्द : शास्त्रीय नृत्य , कत्थक नृत्य , प्रस्तुतीकरण का क्रम l

शोध विधि : शोध कार्य में अध्ययन प्रणाली तथा वर्णनात्मक शोध - विधि का प्रयोग किया गया है l जिसके अंतर्गत अलग-अलग लेखकों तथा विद्वानों के द्वारा नृत्य जगत से संबंधित पुस्तकों तथा लिखित सामग्री को प्रयोग किया गया है l यह शोध- कार्य कत्थक नृत्य से संबंधित है इसलिए कत्थक नृत्य से संबंधित विभिन्न विद्वानों, गुरुओं तथा विचारको के विचारों को सम्मिलित किया गया है l क्योंकि लेखिका खुद कत्थक नृत्य से संबंधित है और कई सालों से कत्थक नृत्य की अध्यापिका व शिष्या रह चुकी हैं इसलिए इस शोध कार्य में स्वयं के अनुभव को भी लेखनी में शामिल किया गया है l

प्रस्तावना : भारत में विभिन्न प्रकार की शास्त्रीय नृत्य शैलियां प्रचलित है जैसे भरतनाट्यम ,कथकली ,कत्थक, मणिपुरी, कुचिपुड़ी, मोहिनीअट्टम तथा ओडीसी l शास्त्र सम्मत नृत्य शास्त्रीय नृत्य कहलाते हैं l भारत में नृत्य से संबंधित सबसे पुराना शास्त्र नाट्यशास्त्र हैl इसके पश्चात अभिनय दर्पण, संगीत रत्नाकर आदि शास्त्रों की रचना हुई l शास्त्रों के अनुसार नृत्य को नर्तन शब्द भी दिया गया है l नर्तन के मुख्यतः तीन तत्व होते हैं - नृत ,नृत्य तथा नाट्य l उत्तर भारत के इस शास्त्रीय नृत्य में नर्तन के यह तीनों तत्व नृत, नृत्य तथा नाट्य सम्मिलित होते हैं l कत्थक का नृत अंग ताल और लय प्रधान होता है नृत्य अंग भाव -प्रधान तथा नाट्य अंग रस - प्रधान होता है l

प्रस्तुत शोध पत्र में कत्थक के प्रस्तुतीकरण को तीन भागों में बांटा गया है - कथक के शुद्ध नृत का भाग या अंग संचालन द्वारा प्रस्तुति, कत्थक के नृत्य और अभिनय का भाग या अंग संचालन तथा अभिनय का भाग, कत्थक के अभिनय का भाग l [1]

कत्थक प्रस्तुति में सर्वप्रथम गुरु वंदना अथवा किसी देवी देवता की स्तुति, वंदना की जाती है l यह कत्थक नृत्य का मंगलाचरण भाग होता है जिसमें नर्तक अपने गुरु, भगवान तथा दर्शकों से नृत्य आरंभ करने से पहले आशीर्वाद तथा नृत्य प्रस्तुति की अनुमति चाहता है l

कत्थक के शुद्ध नृत्य का भाग

कत्थक के इस शुद्ध नृत भाग में आंगिक अभिनय का प्रदर्शन होता है l आंगिक अभिनय में ठाट, आमद, सलामी, तोड़े, टुकड़े, परन, चक्रदार परन आदि नाचे जाते हैं l

ठाट :- ठाट का अर्थ है एक विशेष अंदाज से खड़े होने की विधि या पोज या विशेष भंगिमा l कत्थक नृत्य में भी सर्वप्रथम एक खास अंदाज में खड़े होकर विभिन्न प्रकार का अंग संचालन किया जाता है l एक विशेष भंगिमा में खड़े होकर कलाई , भृकुटी तथा वक्षस्थल आदि का संचालन किया जाता है l यह विभिन्न संचालन कसक-मसक और कटाक्ष कहलाते हैं l कलाई के संचालन को कसक कहा जाता है l कलाइयों के साथ सुंदरता बढ़ाने के लिए सुंदरी ग्रीवा का भी संचालन किया जाता है l ठाट में वक्षस्थल के उतार-चढ़ाव और कंधों के सहारे सीने को धीमी गति से घुमाने की प्रक्रिया को मसक कहा जाता है तथा कत्थक में तीर की तरह नजर को फेंकने को कटाक्ष कहा जाता है l ठाट प्रस्तुति में एक विशेष भंगिमा में खड़े होकर कसक-मसक तथा कटाक्ष द्वारा भाव प्रदर्शन किया जाता है l कटाक्ष की प्रक्रिया में नैनों में मस्ती भरकर पलकों को एक विशेष अंदाज में स्थित करके भृकुटी को संचालित किया जाता है l कसक - मसक और भृकुटी के इस अंदाज को ठाट बनाना कहा जाता है l ठाट कथक नृत्य के प्रस्तुतीकरण का प्रथम चरण होता है क्योंकि कथक प्रस्तुति से पहले या तो नर्तक रंगमंच पर पहले से खड़ा होता है या फिर उठान अथवा आमद में रंगमंच के पीछे से चलकर आता है l पहली स्थिति में जब पर्दा उठता है तो नर्तक एक विशेष अंदाज में रंगमंच पर पहले से खड़ा रहता है l किसी भी ताल में अपनी प्रस्तुति आरंभ करने से पहले वह सर्वप्रथम ठाट प्रस्तुत करता है l ठाट के पश्चात कत्थक के नृत भाग की प्रस्तुति आरंभ हो जाती है l [2]

कत्थक के तीनों घरानों में ठाट की प्रस्तुति अलग अलग अंदाज से की जाती है l लखनऊ घराने के ठाट में कोमलता ,जयपुर घराने के ठाट में अंगों का सुंदरतापूर्ण संचालन दिखाई देता है l लखनऊ के कलाकार ठाट की नजाकत के लिए पैरों को नाजुकता से धरती पर रखते हैं ताकि उनकी आवाज अधिक ना आए l लखनऊ घराने के ठाट में रुखसार(गालों की खूबसूरती), दुपट्टे की स्थिति, बिंदिया का प्रदर्शन किया जाता है l जबकि जयपुर घराने के ठाट में तिहाई को जोड़कर उन मात्राओं पर भी हाथ और पैर को संचालित किया जाता है l [3]

आमद :- साधारण अर्थों में आमद का अर्थ है - आना, आगमन ,प्रवेश करना इत्यादि l यह शब्द फारसी भाषा में से आया है तथा उर्दू भाषा में प्रयोग किया जाता है l आमद जैसे शब्द मुगल काल की देन हैं l राज दरबार में अपनी कत्थक प्रस्तुति देने के लिए नर्तकी विशेष अंदाज से प्रवेश करती थी आज भी नर्तक रंगमंच के पीछे से आमद के बोलों के साथ ही आता है l आमद विलंबित लय में नाची जाती है परंतु आगे चलकर प्रस्तुति की दृष्टि से इसमें कुछ परिवर्तन हो जाता है l कत्थक के लखनऊ घराने में परन लगी आमद नाची जाती है l परंतु जयपुर घराने में आमद को चौगुन लय में प्रस्तुत करते हैं परंतु लय का आधार विलंबित ही रहता है l अंग संचालन तीव्र गति का रहता है l बनारस घराने में अधिकतर 13वीं मात्रा से उठकर सम पर आते हैं l अंग संचालन और प्रस्तुतीकरण तेज गति से होता है l [4]

सलामी :- आमद के पश्चात कथक नृत्य में सलामी प्रस्तुत की जाती है l सलामी फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है प्रणाम करना या नमस्कार करना l यह शब्द अति प्राचीन नहीं है और शास्त्रों में भी इसका वर्णन नहीं मिलता जिस प्रकार आमद शब्द का कथक नृत्य में प्रवेश मुगल काल में हुआ उसी प्रकार सलामी जैसे शब्द भी मुगल काल की ही देन माने जाते हैं l दरबारों में नर्तक अथवा नर्तकी अपने नवाब या दरबारियों को सलाम करके नृत्य आरंभ करते थे l मुगल दरबार में एक छोटा सा टुकड़ा कह कर अंत में तिहाई के साथ तीन बार सलाम करने की क्रिया को सलामी कहा जाता था l [5]

टुकड़ा :- कत्थक नृत्य में प्रयोग होने वाले बोलो के छोटे समूह को टुकड़ा कहा जाता है l यह सम से सम तक की आवृत्ति वाले बोलो का ऐसा समूह होता है जो एक आवर्तन से छोटे भी हो सकते हैं अर्थात बीच की मात्रा से आरंभ करके सम पर समाप्त किए जा सकते हैं l[6] इसमें तबले और पखावज के बोलो की छोटी - छोटी बंदिशें शामिल होती हैं l आंगिक अभिनय का इसमें पूरा-पूरा प्रयोग होता है l टुकड़े विलंबित और मध्य लय में ही नाचे जाते हैं l पहले -पहल कत्थक में टुकड़े ही नाचे जाते थे l

तोड़े :- यह बोलो का ऐसा समूह होता है जिस में भिन्न - भिन्न लय दिखाई जाती है और अंत में तिहाई का प्रयोग भी होता है l यह दो या तीन आवर्तन से अधिक के भी हो सकते हैं l तोड़ा प्रस्तुत करते समय नर्तक पहले हाथ पर ताली देकर उसे बोलता है फिर उन बोलो को ताल के साथ अंगों के संचालन और पैरों की क्रियाओं द्वारा संपादित करता है l तोड़ो के अंत में चक्रों का प्रयोग भी दिखाया जाता है तथा कलात्मकता के साथ सम पर आया जाता है l तोड़े के दो प्रकार माने जाते हैं - गत तोड़ा , संगीत तोड़ा l

गत तोड़ा - जिन तोड़ो में नृत्य और मृदंग दोनों के बोल प्रयुक्त होते हैं उन्हें गत तोड़ा कहा जाता है l

संगीत तोड़ा - जिस तोड़े में गीत के शब्द और नृत्य के बोलों का समावेश होता है उसे संगीत तोड़ा कहा जाता है l[7]

परण :- पखावज और मृदंग पर बजने वाले बोलों की ऐसी बंदिश जिसके बोल जोरदार हो और दोहराए गए हो तथा ताल के कम से कम तीन आवर्तन में हो ऐसे बोलों से निर्मित बंदिश परण कहलाती है l इसमें अनेक नए रूपों से युक्त बोलो की श्रृंखला होती है l परण की बंदिशें तीन चार या उससे भी अधिक आवर्तन की होती है जिसके अंत में तिहाई लगी रहती है l परण विभिन्न जाति, यति और ग्रह पर आधारित होती है l कुछ परणो के बोल दो हरे होते हैं और कुछ परण भिन्न - भिन्न मात्राओं से भी उठती हैं l [8] कथक नृत्य के इस भाग में दर्शक नर्तक के अंगों की खूबसूरती से बनी लयात्मक गति का आनंद उठाते हैं l कई परणे नृत्य, पखावज और तबले के बोलो से निर्मित होती हैं l परण के अंत में तिहाई लगी रहती है जिस में नर्तक चक्रों का खूबसूरत प्रदर्शन करता है l नर्तक परण के बालों को अपने पैरों की आवाजों द्वारा सजीव कर देता है l ऐसा लगता है परंतु बोल उसके पांव में से निकल रहे हैं जो तबले पर बज रहे होते हैं l कथक नृत्य के इस हिस्से में नर्तक अपने पैरों की कुशलता का कमाल दिखाता है l कत्थक नृत्य की प्रस्तुति में जहां ठाट नजाकत तथा कोमलंगी क्रियात्मक प्रक्रिया है वहीं परण तांडवअंग की क्रियात्मक प्रक्रिया है l परण चल रही कथक की प्रस्तुति को वीर रस प्रधान मोड़ देती है l परण की प्रस्तुति में अंगों का जोरदार और जानदार प्रदर्शन होता है जो दर्शकों में जोश का संचार करता है l परण की प्रस्तुति में कई बार कुछ चमत्कारिक प्रदर्शन भी देखने को मिलते हैं जैसे गजपरण में जमीन पर गुलाल बिछाकर परण करते हुए गज की आकृति बनाना, पताशो पर अथवा तलवार या कांच पर परण नाचना इत्यादि l परणो का वर्गीकरण भी किया गया है l परण चार प्रकार की होती है - बोल परण, साथ परण , गत परण , ताल परण l[9]

बोल परण :- साहित्य के बोलो पर आधारित ऐसी परण जिसमें किसी देवी देवता का वर्णन हो तथा जिसमें तबला पखावज और कथक नृत्य के बोल हैं बोल परन कहलाती है जैसे गणेश परण, शिव परण, सरस्वती परण, दुर्गा परण, गुरु परण, देव स्तुति परण आदि l बोल परण को स्तुति परण भी कहा जाता है l

साथ परण : - कत्थक नृत्य की कुछ परण संगत के लिए बनाई गई होती है ऐसी परणो को साथ परण कहा जाता है l

गत परण :- ऐसी बंदिश जो गत के बोलो पर आधारित होती है गत परण कहलाती है l

ताल परण :- आज कत्थक नृत्य प्रस्तुति में जिसे चक्रदार परण कहा जाता है किसी समय ताल परण कहलाती थी l

चक्रदार परण : - इसमें परण के बोलो वाले ही गुण होते हैं l यह भी कत्थक नृत्य के नृत भाग का तांडव अंगी भाग माना जाता है l यह परण से त्रिगुणी मानी जाती है l चक्करदार परण की अवधि और आवर्तन बाकी सभी नृत्य क्रियाओं से अधिक लंबी होती है इसी कारण इसके प्रदर्शन में विशेष अभ्यास की आवश्यकता होती है ताकि लगातार नाचते - नाचते नर्तक थके ना और चक्रों के पश्चात जब सम पर नर्तक रुकता है तो उसकी स्थिति बिखरे ना l

कथक के नृत्य और अभिनय का भाग

कत्थक के नृत्य और अभिनय के इस भाग में कवित गत - निकास , गतभाव आदि आते हैं l कथक नृत्य के प्रस्तुतीकरण में अभिनय और नृत्य दोनों द्वारा भाव प्रदर्शन का यह अद्भुत भाग होता है l

कवित : - कवित अर्थात काव्यबद्ध रचना l कत्थक नृत्य में किसी भी कविता अथवा पद को लयबद्ध और तालबद्ध करके नृत्य के द्वारा उस पर भाव प्रदर्शित किया जाता है l कत्थक नृत्य का यह भाग श्रृंगार रस से भरपूर होता है l चल रहे कत्थक नृत्य के प्रदर्शन को यह भावपूर्ण गति प्रदान करता है l रस और भाव का यह समन्वय दर्शकों को शब्दों द्वारा नृत्य का सुंदरतम अनुभव कराता है l कत्थक नृत्य के इस भाग में वाचिक अभिनय का प्रदर्शन भी देखने को मिलता है l भक्ति भाव से परिपूर्ण इस भाग में साहित्य और संगीत कला दोनों का सुमेल होता है l भक्ति रस की कविताओं के लिए मीराबाई , तुलसी , सूरदास , रसखान आदि के दोहे तथा रीतिकाल के बिहारी आदि कवियों की श्रृंगार रस से परिपूर्ण कविताएं दर्शकों में श्रृंगार रस की भावना को जागृत करती है l कवित के बोल कृष्ण राधा, शिव-पार्वती आदि देवी-देवताओं पर आधारित होते हैं l कवित नटवरी का तोड़ा भी कहा जाता है l मुख द्वारा अभिनय तथा भाव और पैरों द्वारा लय का सुंदरतम प्रदर्शन होता है l हाथ और पैरों के सुंदरतंम संचालन के साथ भावा व्यक्ति होने के कारण इस भाग को कत्थक का अभिनय और नृत्य का भाग कहा जाता है l अधिकतर कवित ब्रजभाषा में होते हैं जिनमें कृष्ण और राधा के प्रेम प्रसंग को अधिकतर लिया जाता है l कई बार कवित में नृत्य के बोलो को पद में लिखकर कवित का रूप दिया जाता है जिसे कविता- तोड़ा या बेमेल - परण कहा जाता है l कवित की रचना छंद बंद होती है इसमें कृष्ण राधा गोपियां ग्वालआदि की क्रीडा विनोद के सुहावने वर्णन होते हैं l संयोग - वियोग रतिक्रीड़ा, बाल लीला, असुर वध आदि किसी भी विषय पर कवित रचा जा सकता है l इस भाग की विशेषता यह है कि नर्तक को नृत, नृत्य और नाटक तीनों तत्वों का प्रयोग करना पड़ता है l[10]

गत- निकास:- गत शब्द का सामान्य अर्थ होता है रूप अवस्था या दशा l गत के रूप में कत्थक नृत्य में नर्तक चलन के साथ - साथ किसी नायक या नायिका की किसी एक अवस्था को प्रस्तुत करता है l गत दो प्रकार की होती है गत - निकास और गत - भाव l

निकास शब्द का अर्थ होता है निकल कर आने की क्रिया अर्थात गत निकास में नर्तक पलटा लेकर किसी एक मुद्रा से निकलकर दूसरी मुद्रा में जाता है l नर्तक की यह मुद्रा ठाट का कोई स्थानक भी हो सकती है और मुरली , मुकुट या घुंघट की मुद्रा धारण कर ली जाए तो वह भाव - गत कहलाती है l गत निकास में नर्तक पलटा लेकर एक दशा से दूसरी दशा में जाता है l निकास या निकलकर आने का ही विशेष महत्व होता हैl गत निकास कथक नृत्य का एक अत्यंत सरल, सुंदर, चमत्कार पूर्ण अंग होता है l यह लखनऊ घराने में विशेष रूप से विकसित हुआ है l नवाब वाजिद अली शाह के काल में सैकड़ों प्रकार की निकास की गतो का आविष्कार हुआ l गत निकास कथक नृत्य की कथा प्रस्तुतीकरण विधा में संकेतत्मकत का विकास है l [11]

गत भाव:- जब किसी बड़ी कहानी या कथा को भावों के साथ मुद्राओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है तो उसे गत भाव कहा जाता है l कत्थक नृत्य के अधिकतर गत भाव कृष्ण लीला पर आधारित होते हैं जैसे माखन चोरी,कालिया मर्दन, गीता उपदेश, पनिया भरन ,पनघट की छेड़छाड़ आदि l[12]

कत्थक नृत्य के प्रस्तुतीकरण के इस भाग में अकेला नर्तक ही किसी कथानक को लेकर उसके समस्त पात्रों का अभिनय करते हुए रस और भाव की सृष्टि करता है l पाश्चात्य देशों में MOMO PLAY या MIME (एकल अभिनय) इसी गत भाव से मिलता जुलता है l मोनोपले में किसी एक ही पात्र की अलग - अलग मानसिक अवस्थाओं का प्रदर्शन होता है परंतु गत भाव में कथानक के सभी पात्रों की अलग - अलग भावों की अवस्थाओं को प्रदर्शित किया जाता है l मोनोपले में जहां लय और ताल का बंधन नहीं होता वहीं गत भाव में समस्त अभिनय तालबद्धहोता है l गत भाव का विकास कथक नृत्य के जयपुर घराने में अधिक विस्तार से हुआ लखनऊ घराने में इसका संक्षिप्त रूप दिखाई पड़ता है l इसे नाटय के अंतर्गत भी माना जाता है l गत भाव की प्रस्तुति करने के लिए एक नर्तक का अभिनय के साथ-साथ लय और ताल में पारंगत होना भी आवश्यक होता है क्योंकि एक ही क्षण में उसे सीता तथा दूसरे क्षण में रावण या किसी अन्य पात्र का भाव व्यक्त करना होता है l गत भाव के अंतर्गत पनघट लीला , राधा कृष्ण की छेड़छाड़ , कालिया दमन , गोवर्धन धारण होली , सीता हरण , द्रोपदी चीर हरण आदि कथानक लिए जाते हैं l [13]

कत्थक नृत्य के अभिनय का भाग

कत्थक नृत्य के अभिनय भाग द्वारा संचार करने को भाव बताना या भावाभिनय भी कहा जाता है l कत्थक द्वारा भावों की अभिव्यक्ति कोई नकल या अनुकरण मात्र नहीं होती बल्कि उसमें प्रेम, विरह, मिलन, जीवन, मृत्यु, आशा, निराशा, खुशी, दुख, जलन या ईर्ष्या, क्रोध, यात्रा, दिल की पीड़ा, हास्य अनुभव आदि कितने ही भाव तथा बुढ़ापा, नदी, समुंद्र, आकाश, तारे, गलियां, किनारा, कुंज, राधा, कुब्जा, सखी, सौतन, योगी, सन्यासी, आदि अनेकों चरित्रों के भाव प्रदर्शन शरीर के अंगों, चेहरे के भावों, आंखों, पलकों, नजरों, नजाकत, मुस्कान आदि द्वारा दिखाए जा सकते हैं l [14]

कत्थक नृत्य के इस भाग में ठुमरी, गजल, भजन ,सूफी आदि द्वारा नृत्यमई अभिनय प्रदर्शन दिखाया जाता है l जिसके द्वारा श्रृंगार, शांत और भक्ति रस का रसास्वादन दर्शकों को कराया जाता है l

ठुमरी : - ठुमरी शब्द ठुमक से बना है जिसका साधारण अर्थ है नजाकत से चलना, लयात्मक चाल अथवा मदमस्त चलना l [15]

ठुमरी एक श्रृंगार रस प्रधान भावपूर्ण गायन शैली है l क्योंकि ठुमरी शब्द का संबंध ठुमकने से है अर्थात अपने शब्द को सार्थक करती गायन शैली की यह विधा स्वता ही अपना संबंध नृत्य कला से सार्थक करती है l ऐसी धारणा है कि ठुमरी का जन्म 19वीं शताब्दी में वाजिद अली शाह के समय में हुआ l [16]

19वीं शताब्दी के मध्य तक विभिन्न उत्सव और महफिलों में वेश्याओं द्वारा ठुमरी गायन के साथ उसके बोलो के अर्थ , भाव को कत्थक नृत्य शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था l इसका विकास नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में हुआ l ठुमरी के विकास और प्रचार प्रसार में बिंदादीन महाराज और सादिक अली खान का नाम प्रमुख है l नवाब वाजिद अली शाह एक कुशल कवि नाटककार संगीतकार नर्तक और ठुमरी के रचनाकार माने जाते हैं l ठुमरी एक शृंगार रस प्रधान भाव अभिव्यक्ति युक्त गायन शैली है जिसे कत्थक नृत्य द्वारा विभिन्न भावों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है l ठुमरी के दो प्रकार होते हैं - बोल - बांट की ठुमरी तथा बोल - बनाव की ठुमरी l

बोल - बांट की ठुमरी में लय की प्रधानता होती है l इसमें नृत्य के साथ विभिन्न वाद्य यंत्रों जैसे सितार , सरोद , दिलरुबा आदि का प्रयोग किया जाता है l बंदिश की ठुमरी में शब्दों का चयन इस प्रकार किया जाता है कि लय थिरकती रहे l

ठुमरी की बंदिशों को अधिकतर मध्य लय में तथा तीन ताल में गाया जाता है l ठुमरी की ताल को पंजाबी भी कहा जाता है l पंजाबी तीन ताल का ही एक प्रकार है l कत्थक में भाव दिखाने के लिए भी यही ताल और लय उपयुक्त मानी जाती है l

बोल - बनाव की ठुमरी : - ठुमरी के जिन भावों को एक कथक नर्तक अपने हाव-भाव द्वारा प्रस्तुत करता है उन्हीं भावों को एक गायक जब अपने गले द्वारा अदा करता है उसे बोल - बनाव की ठुमरी के अंतर्गत माना जाता है l कथक नर्तक और वेश्याएं बोल - बाट की ठुमरीयो को खड़े होकर गायन के साथ नृत्य अभिनय करते थे तथा बोल बनाव के ठुमरीयो को गायक - गायिकाए बैठ कर गाते थे परंतु इन्हीं ठुमरीयो पर कथक नर्तक बैठकर आंगिक भाव अभिव्यक्ति करते थे l कत्थक नृत्य के विख्यात गुरु शंभू महाराज का नाम इस तरह की ठुमरी प्रभाव प्रदर्शन के लिए उल्लेखनीय है l बिंदादीन महाराज के समय में ठुमरी पर भाव प्रदर्शन अधिकतर खड़े होकर किया जाता था l बैठकर भाग दिखाने का चलन सर्वप्रथम शंभू महाराज जी ने आरंभ किया l [17]

बोल - बनाव की ठुमरीयो के गायन के साथ नृत्य करना अति कठिन होता था इसलिए इनका प्रचलन समय के साथ समाप्त सा हो गया था परंतु 20 वी शताब्दी के प्रारंभ में व्यापक रूप से फिर से यह चलन सामान्य हुआ l कत्थक नृत्य के प्रस्तुतीकरण के अंतिम चरण में भाव प्रदर्शन ठुमरी गायन द्वारा किया जाता है l एक अच्छे नर्तक को ठुमरी पर भाव प्रदर्शन करने के साथ-साथ ठुमरी गायन का अध्ययन भी अनिवार्य होता है l वर्तमान काल में बोल -बांट की मध्य और द्रुत लय की ठुमरीयों का प्रस्तुतीकरण कथक नर्तक करते हैं l यह कत्थक नृत्य की प्रस्तुति में गायन, वादन और नृत्य का सुंदरतम संगम होती है l

कत्थक नृत्य में अभिनय द्वारा भाव प्रदर्शन मे ठुमरी के इलावा गजल, सूफी, भजन आदि द्वारा भी नृत्य प्रस्तुति के अंतिम भावपूर्ण चरण को सुसज्जित किया जाता है l आज कत्थक नृत्य के इस चरण में गीत, दोहे , कविताएं आदि पर भी भाव प्रदर्शित किया जाता है l ठुमरी की तरह गीत, गजल, सूफी आदि गायन शैलियों को गाकर उन पर भाव प्रदर्शित किया जाता है l कई बार नर्तक इन गायन- शैलियों पर खुद गाकर भाव दिखाता है और कभी गायक द्वारा गाई गई शैलियों पर भाव प्रदर्शित करता है l कत्थक का यह अंतिम चरण नर्तक द्वारा वाचिक अभिनय या शाब्दिक संचार का खूबसूरत उदाहरण होता है l आज इस माध्यम से ना केवल दर्शकों को वाचिक अभिनय की खूबसूरती का पता चलता है बल्कि कई बार कई तरह की सामाजिक बुराइयों को भी शाब्दिक संचार द्वारा दशकों तक बड़े ही भावपूर्ण अंदाज से पहुंचाया जाता है l

संदर्भ पुस्तक सूची :

[1] कत्थक दीक्षा – राधिका मित्तल, राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पन्ना संख्या – 55

[2] भारतीय संस्कृति में कत्थक परंपरा – मांडवी सिंह , स्वाति पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1990, पन्ना संख्या – 191,192

[3] संगीत कला विहार (पत्रिका जुलाई 2013)– डॉ मोनिका सिंह, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, मुंबई , पन्ना संख्या – 34

[4] कत्थक ज्ञानेश्वरी – पंडित तीरथ राम 'आजाद', नटेश्वर कला मंदिर मंदिर, नई दिल्ली, 2008, पन्ना संख्या – 493

[5] नृत्य अभिज्ञान – शोभा कौसर, पार्थ प्रकाशन चंडीगढ़, 2006, पन्ना संख्या – 79,80

[6] कथक के प्राचीन नृतागं – डॉ श्रीमती गीता रघुवीर, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, 2000, पन्ना संख्या – 75

[7] ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य – माया टॉक, कनिष्क पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली, पन्ना संख्या – 27, 28

[8] कथक के प्राचीन नृतागं – वही, पन्ना संख्या – 76

[9] मृदंग तबला प्रभाकर – श्री भगवानदास मृदंगाचार्य, संगीत कार्यालय हाथरस,1959, पन्ना संख्या – 2

[10] कत्थक दर्पण – तीर्थ राम आजाद, नटेश्वर कला मंदिर मंदिर, नई दिल्ली, 1980, पन्ना संख्या – 178, 179

[11] कथक नृत्य शिक्षा – डॉ.पुरू दाधीच, प्रथम भाग, बिंदु प्रकाशन इंदौर, 1998, पन्ना संख्या – 71, 72

[12] कत्थक दीक्षा – वही , पन्ना संख्या – 45

[13] कथक नृत्य शिक्षा – वही , पन्ना संख्या– 72

[14] हमारा आधुनिक संगीत – डॉ सुशील कुमार चौबे, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 2005, पन्ना संख्या – 150

[15] कथक , शोभना नारायण – रोली बुक्स, नई दिल्ली,1998– पन्ना संख्या – 100

[16] नृत्य में गायन शैलियों का प्रचलन – डॉ अंजूल शर्मा (Edited), ठुमरी गायन शैली – कथक के संदर्भ में – डॉ रश्मि नंदा, नव प्रिंटर एंड डिज़ाइनर, जालंधर, 2012–13 पन्ना संख्या – 26

[17] साप्ताहिक हिंदुस्तान , 22 नवंबर, 1970 – वे रुकेंगे क्योंकि जिनके पांव में गति है , नंदराम चतुर्वेदी , पन्ना संख्या – 11